भारतीय इतिहास सृजन : मेगस्थनीज के विवरणों के आलोक में

' अजय कुमार
'' डा0 अजय सिंह आर्य

तीसरी शदी ईसा पूर्व में जब चन्द्रगुप्त मौर्य अपने साम्राज्य निर्माण में लगा हुआ था ठीक उसी समय सिकन्दर का सेनापति सेल्युकस अपनी महानता की नींव स्थापित करने में लगा हुआ था। सेल्युकस अपने पूर्वी अभियान के दौरान भारत की ओर आकर्षित हुआ। वह 304 ई0पू0 में काबुल के मार्ग से होते हुए सिन्धु नदी की ओर बढ़ चला[1]। उसे नदी पार करते ही चन्द्रगुप्त की सेना का सामना करना पड़ा। सेल्युकस चन्द्रगुप्त के विरूद्ध सफलता प्राप्त नहीं कर सका और अपने पूर्वी राज्यों की सुरक्षा के लिए चन्द्रगुप्त से सन्धि करनी पड़ी थी। सन्धि को अपने वैवाहिक सम्बन्ध से और भी अधिक पुष्ट करने के लिए उसने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया। सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त को चार प्रान्त (काबुल, कंधार, मकरान और हेरात) दिये। चन्द्रगुप्त ने भी सेल्युकस क500 हाथी उपहार स्वरूप किये[2]। संभवतः इसी सन्धि के परिणाम स्वरूप ही हिन्दुकुश साम्राज्य और सेल्युकस राज्य के बी की सीमा बन गया। 2(से भी अधिक वर्ष पूर्व भारत के प्रध सम्राट ने उस प्राकृतिक को प्राप्त किया था जिसे भारत के अन्य शासक व अंग्रेज भी नहीं कर सके थे[3]।

' शोधछात्र, शासकीय उत्कृष्ठ स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुरैना (म0प्र0) '' प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग, शासकीय उत्कृष्ठ
स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुरैना (म0प्र0)

सेल्युकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा। मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में 304 ई0पू0 से 299 ई0पू0 के बीच रहा। उसने भारत में जो भी देखा उसका वैसा ही वर्णन अपने यात्रा वृत्तांत 'इण्डिका' में कर दिया[4]। यद्यपि यह पुस्तक अपने मूल रूप में नही है फिर भी इसके उद्धरण अनेक यूनानी लेखकों एरियन, स्ट्रैवो, फ्लूर्टाक जस्टिन आदि के उद्धरणों में प्राप्त होते हैं[5]। कुछ विद्वान मेगस्थनीज के विवरण को शंका की दृष्टि से देखते हैं किन्तु इसका विवरण भारतीय इतिहास के निर्माण में बड़ा ही सहायक सिद्ध हुआ है। डा0 श्वानवेक ने सर्वप्रथम 1846 ई0 इन समस्त उदाहरणों को संग्रहीत करके प्रकाशित किया था तथा 1891 ई0 में मैक्रिण्डल महोदय ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया था[6]। मेगस्थनीज ने अपने वृत्तांत में भारत के विषय में अनेक बातों का वर्णन किया है यथा–

भारत एक चतुर्भुज के समान है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत दक्षिण व पूर्व में समुद्र और पश्चिम में सिन्धु, गंगा, सोन, कोशी, गोमती, यमुना आदि नदियाँ हैं। ग्रीष्मकाल में भीषण गर्मी पड़ी है। ठंड व ग्रीष्म ऋतु में वर्षा होती है। भारत के लोग सुखी समृद्धशाली एवं पूर्णरूप से आत्मनिर्भर हैं[7]।

मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त का नाम **सेन्ड्रोकोट्टस**[8] के रूप में उद्धृत किया है। उसके अनुसार शासक के चारों ओर सशक्त महिलाएं अंगरक्षक के रूप में रहती थी। शासक निरन्तर प्राण भय से आशंकित रहा था[9]। सम्राट अपने प्रासाद से चार अवसरों पर ही बाहर जाा था।

वह अत्यन्त ही कर्तव्य परायण था और आखेट के निमित्त। वह अत्यन्त ही कर्तव्य परायण था। जब वह आबनूस के मुगदरों से अपने शरीर को दबवाा था। तब भी वह प्रजा के अभियोग सुनता था[10]। आखेट के समय उसका मार्ग रस्सियों से घेर दिया जाता था और इसको लांघने वाले के लिए प्राणदण्ड का विधान था। जब सम्राट राजमार्ग पर निकलता था, वह सोने की पालकी में सवार होकर निकलता था। सुन्दर कढ़े हुए चमक वाले वस्त्र पहनता था। यात्रा करते समय वह अश्व या गज का प्रयोग करता था[11]।

मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त की राजधानी पोलिब्रोथा[12] (पाटिलीपुत्र)

का भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। पाटिलीपुत्र गंगा और सोन नदियों

के संगम पर स्थि था। यह पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर था। यह

80 स्टेडिया (16 किमी0) लम्बा था 15 स्टेडिया (3 किमी0) चौथा था। इसके चारों और 185 मी0 चौड़ी थी 30 हाथ गहरी खाँईं थी। नगर चारों ओर से एक ऊँची दीवार से घिरा हुआ था। जिसमें 64 तोरण तथा 570 बुर्ज थे। राजप्रासाद लकड़ी का निर्मित हुआ था। यह

राजप्रासाद भव्यता और शान शौकत में सूसा और एकवतना के राजमहल को भी पीछे छोड़ देता था[13]। मेगस्थनीज ने नगर प्रशासन

पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार नगर का प्रशासन पाँच–पाँच सदस्यों की छः समितियाँ देखती थी। उसने नगर के प्रमुख को एस्ट्रोनोमोई[14] कहा है। इन समितियों के विवरण निम्नवत हैं:–

(1) शिल्पकला समिति (2) विदेश समिति (3) जनगणना समिति (4) उद्योग समिति (5) वस्तु निरीक्षण समिति (6) कर निरीक्षण समिति

सैन्य प्रशासन के बारे में मेगस्थनीज ने वर्णित किया है कि चन्द्रगुप्त की सेना चार भागों में विभाजित थी– (1) पैदल सेना (2) अश्वारोही सेना (3) गज सेना (4) रथ सेना। उसकी सेना में 60000 पदति, 30000 अश्वारोही, 9000 हाथी और 8000 रथ थे। इस विशाल सेना का प्रबन्ध युद्ध परिषद द्वारा होता था[15]। इस परिषद के सदस्य पाँच–पाँच की समियों में विभक्त थे। प्रत्येक का कार्य एक दूसरे से भिन्न था। प्रथम समिति का कार्य जल सेना की व्यवस्था करना था। दूसरी समिति सेना की आवश्यक वस्तुओं और रसद का प्रबन्ध करती थी। तीसरी समिति पैदल सेना का प्रबन्ध करती थी। चौथी समिति अश्व सेना का प्रबन्ध करती थी। पाँचवीं समिति रथ सेना का प्रबन्ध और छठी समिति गज सेना की व्यवस्था करती थी[16]।

मेगस्थनीज ने राजस्व प्रशासन का भी वर्णन किया है। राजा भूराजस्व का 1/4 भाग लेता था। उसने भारत में सोने की उत्कृष्ट खानों के बारे में भी बताया है जिनसे पर्याप्त मात्रा में सोना निकाला जाता था। उसने सोना निकालने वाली चीटियों के बारे में भी वर्णन किया है जो सोने की वुरादे के रूप में बाहर निकालती थी। उसने सोने की प्रसिद्ध खान दर्दिस्तान (कश्मीर) बताया है[17]। मेगस्थनीज ने भारतीय समाज के विषय में भी वर्णन किया है। भारतीयों में व्यक्तिगत नैतिकता एवं समाज का उच्च स्तर था। वे मुकदमेबाजी नहीं करते थे। वे एक दूसरे पर अधिक विश्वास रखते थे। भारतीय सूदखोर नहीं होते थे। गेहूँ, चावल प्रमुख खाद्यान्न थे। भोजन सादा व सात्विक होता था। सार्वजनिक भोज प्रथा नहीं थी। लोग वस्त्र एवं आभूषणों के शौकीन थे[18]।

मेगस्थनीज ने समाज में सात श्रेणियों के बारे में भी वर्णन किया है[19]। जिनमें दार्शनिक, कृषक, योद्धा, पशुपालक, कारीगर, निरीक्षक और मंत्री। ब्राह्मण संन्यासी एवं श्रवण अत्यन्त सरल जीवन व्यतीत करते थे। वे भोग विलास से दूर रहते थे तथा उनका अधिकांश समय चिन्तन–मनन में ही व्यतीत होता था।

कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था। देश में अनाज की दो फसलें
प्रतिवर्ष बोयी जाती थी, गन्ना भी उगाया जाता था। युद्धकाल में राजा
के सैनिक कृषकों व उनकी फसलों को किसी प्रकार की हानि नहीं
पहुंचाते थे। इस प्रकार युद्धकाल में भी कृषक शांतिपूर्वक कृषि कार्य करते रहते थे[20]। नदियों का प्रबन्ध, भूमि की माप आदि का निरीक्षण
करने के लिए अलग–अलग अधिकारी होते थे। नहरों द्वारा सिंचाई की
व्यवस्था थी। दुर्भिक्ष नहीं पड़ते थे लेकिन जब दुर्भिक्ष होते थे तब राज्य की ओर से विशेष सहायता दी जाती थी[21]। भारतीय पुर्नजन्म में विश्वास करते थे और देवताओं की पूजा करे थे। भारत में यूनानी देवा
डियोनीसियस (शिव) एवं हेराक्लीज (कृष्ण) की पूजा होती थी[22]। गंगा व सिन्धु नदियाँ बड़ी पवित्र मानी जाती थी।

मेगस्थनीज ने उत्तरापथ का भी वर्णन किया है। यह सड़क सिन्ध को बंगाल के सोनारगांव से जोड़ी थी। इस सड़क का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा करवाया गया था जिसकी लम्बाई 1300 मील थी[23]। भारत में दण्ड व्यवस्था कठोर थी जिसके कारण यहाँ अपराध कम होते थे। अपराधों के लिए अंग–भंग किया जाता था। कारीगर के हाथ–पैर,

नेत्र या किसी अंग को नुकसान पहुंचाने या शासकीय सम्पत्ति की हानि पहुंचाने पर मृत्युदण्ड दिया जाता था।[24]

भारत का गौरवमयी इतिहास रहा है लेकिन हमें दुर्भाग्यवश अपने प्राचीन इतिहास के सृजन के लिए उपयोगी सामग्री बहुत कम प्राप्त होती है। यह भी सत्य है कि हमारे यहाँ हेरोडोटस और लिवी जैसे इतिहास लेखक नहीं उत्पन्न हुए जैसा कि यूनान, रोम आदि देशों में हुए फिर भी हम अपने प्राचीन इतिहास को पुरातात्विक व साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर सृजित करते आये हैं। इसी कड़ी में प्राचीन भारत में आने वाले विदेशी यात्रियों के वृत्तांत भी इतिहास सृजन में अहम भूमिका का निर्वहन करते हैं। मेगस्थनीज के य'ही वृत्तांत हमें भारतीय इतिहास के सृजन में बहुत ही सहायता प्रदान करते हुये नजर आ रहे हैं। इन विवरणों को इतिहास के पटल पर रखने पर हमारा प्राचीन इतिहास और भी स्वर्णिम यात्रा के साथ नजर आने लगा है। यदि इसे और भी गहराई से स्पष्ट किया जाय तो हमारे प्राचीन इतिहास की चमक और भी बढ़ जायेगी तथा मेगस्थनीज के वृत्तांतो का महत्व भी और बढ़ जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

आर0सी0 मजूमदार क्लासिकल एकाउन्ट ऑफ इ
पृ0 193

के0सी0 श्रीवास्तव प्राचीन भारत का इतिहा
संस्कृति, यूनाइटेड बुक
इलाहाबाद 2004–05 पृ0 217

3 द्विजेन्द्र नारायण झा एवं – प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली,
2007 पृ0 176

श्रीमाली

के0सी0 श्रीवास्तव – प्राचीन भारत का इतिहा
संस्कृति, यूनाइटेड बुक
इलाहाबाद 2004–05 पृ0 221

5 वही, पृष्ठ 221

6 डा0 रामवृक्ष सिंह – प्राचीन भारत, स्टूडेन्ट्स
इलाहाबाद, 2002 पृ0 20

7 के0ए0 नीलकंठ शास्त्री – नंद युगीन भारत, मोत
बनारसीदास, दिल्ली, 1998 पृ0 93

8 झा एवं श्रीमाली – प्राचीन भार का इतिहास, हिन्दी
कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली,
पृ0

9 नीलकंठ शास्त्री – नंद मौर्य युगीन भारत, मोतीलाल
बनारसीदास, दिल्ली, 1998 पृ0 128

10 डा0 रामवृक्ष सिंह – प्राचीन भारत, स्टूडेन्ट्स
इलाहाबाद, 2002 पृ0 80

वही, पृ0 80

के0सी0 श्रीवास्तव – प्राचीन भारत इतिहास संस्कृति, यू बुक इलाहाबाद 200 पृ0 221

13 वही, पृ0 222

14 शिव नारायण सिंह राना – प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा0लि0 2003 पृ0 92

15 वही, पृ0 92

16 वही, पृ0 92

नीलकंठ शास्त्री नंद मौर्य युगीन भारत, म बनारसीदास, दिल्ली, 1998 पृ0 98

विन्सेंट स्मिथ अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ0 224

के0सी0 श्रीवास्तव प्राचीन भारत का इतिहास संस्कृति, यूनाइटेड बुक इलाहाबाद 2004–05 पृ

नीलकंठ शास्त्री नंद मौर्य युगीन भारत, म बनारसीदास, दिल्ली, 1998 पृ0 121

रामचन्द्र शुक्ल मेगस्थनीज का भारत खण्डेवाल पब्लिशर्स एण्ड डि 2016 पृ0 19–20

22 वही, पृ0 19

23 वही, पृ0 23

के0सी0 श्रीवास्तव – प्राचीन भारत इतिहास संस्कृति, यूनाइटेड बुक इलाहाबाद 200 पृ0 258